



प्रार्थना काव्य

پرارتھنا کاویہ



लेखक व प्रकाशक
हरबंसलाल चोपड़ा
(अथल सस्थायी)

मुख्य व्यवस्थापक दैनिक प्रताप व बीर बाजुंन,

प्रथम बार २०००

मथुरा रोड, नई दिल्ली

मूल्य १० नये पैसे

प्राथना काव्य

पहला मन्त्र

پہلا منتر

ओम् विश्वानि देव सवितरदुरितानि परासुव ।

यद्भद्रं तन्न आसुव ॥१॥

यजुः ३०।३।

शब्दार्थ—हे (सवितः) सकल जगत के उत्पत्ति कर्ता समग्र ऐश्वर्ययुक्त, (देव) शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके (न) हमारे विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुखों को (परासुव) दूर कर दीजिए । (यत्) जो (भद्रम्) कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं (तत्) वह सब (न) हमको (आसुव) प्राप्त हों ।

भावार्थ—हे सकल जगत के उत्पत्तिकर्ता समग्र ऐश्वर्ययुक्त शुद्ध स्वरूप सब प्रकार के सुखों के देने वाले परमेश्वर ! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख दद दूर कर दीजिए और जो गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ कल्याण के कारक हैं वह हमें प्रदान कीजिए ।

काव्य

सकल जगत के उत्पत्ति कर्ता	शुद्ध स्वरूप सकल दुख हर्ता
समग्र ऐश्वर्य युक्त विधाता	है प्रभु सब मंगल के दाता
हमारे दुर्व्यसन और दुर्गुण	दुख क्लेश सब करो निवारण
कर्म स्वभाव गुण और पदार्थ	जेते हैं कल्याण के कारक
तुम्हरी कृपा से हों प्रान्त	दुष्ट भाव सब हों समाप्त

ایجادن) اوم دشنوانی دیو سویتر دُرَتانی پراسوید بھدرم تن آسو
(شید ارتھ) سے (سویتہ) سکل جگت کے اُتپتی کرتا - سمکراشورنیہ یکیت (دیو) شد سوروی
سب بھکھوں کے داتا پریشور! آپ کریا کر کے (نہ) ہمارے (دشنوانی) سمیورن (دُرَتانی) دُرگن
دُرولیسن اور دُکھوں کو (پراسو) دُور کر دیجئے - (دیت) جو (بھدرم) کلپان کارک گن کرم سوبھا
اوریدارتھ - (دقت) وہ سب (نہ) ہم کو (آسو) پراپت کیجئے -

میں (۱) ہے کل جگت کے اتنی کرتا۔ مگر انیشوریہ وان شدہ سورپ سب طرح کے سمجھوں کے دینے ہمارے پرستو یا آپ کریا کر کے ہمارے سمیرون درگن - دروہین اور گھ درد دور کر دیجئے۔ اور جو گن کرم سو بھاؤ اور پادار گھ کلیان کے کارک ہیں۔ وہ ہم کو پڑان کیجئے

کاویہ

سکل جگت کے اتنی کرتا	شدہ سورپ سکل گھ ہستتا
مگر انیشوریہ ٹیکت ودھاتا	ہے یہ بھی سب مشکل کے داتا
ہمے دروہین اور درگن	گھ کلیش سب کرو توارن
کرم سو بھاؤ گن اور پادار گھ	جیتے ہیں کلیان کے کارک
نمری کریا سے ہو دیں پڑایت	دشٹ بھاؤ سب ہو دیں سمایت

دوسرا منتر

ओम् हिरण्यगर्भ समवर्तताग्रे भूतस्य जातः
पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ २ ॥

यजुः १३। ४।

शब्दार्थ—जो (हिरण्यगर्भः) सर्व प्रकाश स्वरूप और जिसने प्रकाश करने हारे सूर्य चन्द्रादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो (भूतस्य) उत्पन्ने सम्पूर्ण जगत् का (जातः) प्रसिद्ध (पतिः) स्वामी (एकः) एक ही चेतनस्वरूप (आसीत्) था जो (अग्रे) सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व (समवर्तत) वर्तमान था, (सः) वह (इमाम्) इस (पृथ्वीम्) भूमि (उत) और (द्याम्) सूर्यादि को (दाधार) धारण कर रहा है, हम लोग उस (कस्मै) सुख स्वरूप (देवाय) शुद्ध परमात्मा के लिए (हविषा) ग्रहण करने योग्य योग्याभ्यास और अति प्रेम से (विधेम) भक्ति विशेष किया करें।

भावार्थ :—जो सब प्रकाश स्वरूप और जिसने प्रकाश करने वाले सूर्य, चन्द्र आदि पदार्थ उत्पन्न कर के धारण किए हैं, जो सब उत्पन्न हुए जगत् का एक ही चेतन स्वरूप प्रसिद्ध स्वामी है, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पहले भी था और अब भी है, वह इस भूमि और सूर्य आदि को धारण कर रहा है। हम लोग उस सुख स्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य, योग्याभ्यास और अति प्रेम से भक्ति विशेष किया करें।

प्योति का भण्डार अनुपम
 जो प्रकाश के करने हारे
 उत्पन्न करके किए हैं धारण
 जो है एक ही अन्तर्यामी
 सच्चिदानन्द सर्वेश जो प्यारा
 उत्पन्न धारण करने योगा
 त्याग भाव और पूरे जतन से
 आज्ञा उसकी पालें हमेशा

(اچھا دن) آدم ہرنیہ گر بھاسم درت آگرے بھولتہ جاتہ بتی زیک آسیت سدا دھار
پر بھویم دیا مٹھے مام کسمی دیوائے ہریش ودھیم -
(شیدا دھت) جو دہرنیہ گر بھاسم درت آگرے بھولتہ جاتہ بتی زیک آسیت سدا دھار
چندرا دی پدارتھ (تین کر کے دھان گئے ہیں۔ جو دہرنیہ گر بھاسم درت آگرے بھولتہ جاتہ بتی زیک آسیت سدا دھار
(بتی) سوامی (ریک) ایک ہی جیتن سورپ (آسیت) تھا۔ جو (دھت) سب جگت کے اتن ہونے
سے پرورد (سم درت) درتھان تھا۔ وہ (دام) اس پر بھویم (بھویم) (اور دیام)
سورج آدی کو (داد دھار) دھان کر رہا ہے۔ ہم لوگ اس کسمی (سکھ سورپ) (دیوائے) شہرہ
پر ماتما کے لئے (دوسری شا) گرن کرنے یوگیہ لوگ ابھیاں اور اتی پریم سے (دھت) بھگتی ویشیک
(بھاسم درت) جو سورپ کاش سورپ اور جس نے پرکاش کرنے ہائے سورج چندرا دی
پدارتھ (تین کر کے دھان گئے ہیں۔ جو سب اتن ہونے جگت کا ایک ہی جیتن سورپ پر بھویم
ہے۔ جو سب جگت کے اتن ہونے سے پہلے بھی تھا۔ اور اب بھی ہے۔ وہ اس بھویم اور سورج
آدی کو دھان کر رہا ہے۔ ہم لوگ اس سکھ سورپ شہرہ پر ماتما کے لئے گرن کرنے یوگیہ لوگ
ابھیاں اور اتی پریم سے بھگتی ویشیک کس -

جیوٹی کا بھنڈا دار انویم
جو پرکاشش کے کرنے ہارے
اتن کر کے رکھے ہیں دھارن
جو ہے ایک ہی استرہی
سجھا بند مرویش جو پاتا
اتن دھارن کرنے لگا
تباہ بھاؤ اور پورے جن سے
آتھیا اس کی یا میں ہمیشہ

جو ہے سرد پیکاش سور ویم
سور یہ چند یدارتہ سارے
جس کرتانے کہے ہیں اُتین،
سب جگ کا پر سدھ سواری
سور یہ پرتھوی کا آدھارا
جو تھا۔ جو ہے۔ اور جو ہوگا
اتی پریم اور انتہ کرن سے
اس کی ہمتی کریں ویشنا

तृतीय मंत्र

ओम् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते
प्रशिषं यस्य देवाः । यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ३ ॥

यजुः २५। १३।

शब्दार्थः—(यः) जो (आत्मदा) आत्मज्ञान का दाता (बलदा) शरीर, आत्मा और समाज के बल का देने वाला (यस्य) जिसकी (विश्व) सब (देवाः) विद्वान् लोग (उपासते) उपासना करते हैं और (यस्य) जिसका (प्रशिषम्) प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, (यस्य) जिसका (छाया) आश्रय ही (अमृतम्) मोक्ष सुखदायक है, (यस्य) जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही (मृत्युः) मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) सकल ज्ञान के देने वाले परमात्मा की प्राप्ति के लिए (हविषा) आत्मा और अन्तःकरण से (विधेम) भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें । ३।

भावार्थः—जो प्रभु आत्मज्ञान का देने वाला और शरीर आत्मा और समाज के बल का देने वाला है, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसके प्रत्यक्ष सत्य रूप शासन न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं । जिसका आश्रय ही मोक्ष देने वाला है और जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना मृत्यु आदि दुःखों का हेतु है । हम लोग सुख स्वरूप परमात्मा को पाने के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति करें अर्थात् उसकी आज्ञा पालन में तत्पर रहें ।

काव्य

आत्मज्ञान का देने हारा	शक्ति दाता बल भण्डारा ।
सभी देव और सभी महाजन	करते हैं नित जिसका पूजन ।
सत्य परायण जिसका शासन	शिक्षा न्याय माने हैं सब जन ।
जिसका आश्रय है सुखदायक	मुक्ति दाता कष्ट निवारक ।
जिससे हटता भक्ति न करना	मानो है जीते जी मरना ।
अति प्रेम और अन्तःकरण से	त्याग भाव और पूरे जतन से ।
उसकी भक्ति करें विशेषा	आज्ञा उसकी पालें हमेशा ।

اچارن۔ ادم یا آتم قابلِ نالسیہ و شو اُپاستے۔ پرشتم کیہ دیوا۔ لسیہ چھایا امرتم۔
 لسیہ مرتیو۔ کمی دیواستے ہو لیشا و دھیم۔

شہدار تھ۔ (یا جو) (آتم دا) آتم گیان کا داتا (دل دا) شیر آتما اور سمارج کے بل کا دینے والا
(لیمہ جس کی (دشو) سب (دلیا) و دو ان لوگ (اُپارے) اُپا سنا کرتے ہیں اور (لیمہ) جس کی (پریشتم)
پر تکیں ستیہ سوروپ ساشن بنائے ارتقات شیکشا کولنتے ہیں (لیمہ جس کا (چھایا) آشرے ہی
(امرتم) موکش دانگ ہے (لیمہ) جس کا نہ اننا ارتقات بھگتی نہ کرنا ہی (مرتو) مرتو ادی دلو کا ستو
ہے ہم لوگ اس (مسمی) سکھ سوروپ (دلیا) سکلی گیان کے دینے دے پر ماتا کی پر اپنی کے دیہ
(پویشا) آتما اور اتہ کرن سے (ودھیم) بھگتی ارتقات اس کی آگیا پالن کرنے میں نت پر میں۔

بھاوار پتھر۔ جو یہ ہو آتم گیان کا دینے والا اور شریر آتما اور سماں کے بل کا دینے والا ہے۔ جس کی سب و دعائ لوگ آپاسنا کرتے ہیں۔ اور جس کے پر تکیں سیدہ سوروپ شاسن منہ کے ارتقات شکشا کو ملتے ہیں جس کا آسر ہی موکش دینے والا ہے۔ اور جس کا نہ ماننا ارتقات بھگتی نہ کرنا مرتو آدمی دکھوں کا پتو ہے۔ ہم لوگ اس سکھ سوروپ پر ماتا کو پالنے کے لئے آتما اور انتہہ کرن سے بھگتی کریں۔ ارتقات اس کی آگیا پالن میں تہ پر ہیں۔

آتم گیان کا دینے والا۔ ۱۔ شکتی وانا بل بھنڈا۔
 سبھی دیو اور سبھی مہاجن۔ ۲۔ کرتے ہیں نیتہ جن کا پوہن۔
 ستیہ پراتن جن کا شاسن۔ ۳۔ شکشانیائے ماین میں سب جن
 جن کا آشراف سے شکھد ایک۔ ۴۔ مکتی وانا کشٹ نوارک
 جن سے ہٹنا بھگتی نہ کرنا۔ ۵۔ مانوہے جیتے جی مرنا۔
 اتی پریم اور انتہ کرن سے۔ ۶۔ تیاگ بھاداد پورے عین سے
 اس کی ملکیتی کریں دشیشا۔ ۷۔ آگیا اس کی پالیں ہمیشہ۔

चौथा मंत्र

چوتھا منتر

ओम् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा
जगतो बभूव । य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ४ ॥

यजुः २३ ३।

अर्थ :—(यः) जो (प्राणतः) प्राण वाजे और (निमिषतः) अप्राणि रूप (जगतः) जगत् का (महित्वा) अपने अनन्त महिमा से (एक इत्) एक ही (राजा) राजा (बभूव) विराजमान है; (यः) जो (अस्य) इस (द्विपदः) मनुष्यादि और (चतुष्पदः) गौ आदि प्राणियों के शरीर की (ईशे) रचना करता है, हम उस (कस्मै) सुख स्वरूप (देवाय) सकलैश्वर्य के देने हारे परमात्मा की उपासना अर्थात् (हविषा) अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञा पालन में समर्पित करके (विधेम) भक्ति विशेष करें । ४ ।

भावार्थ :—जो अपनी अनन्त महिमा से प्राणी और अप्राणी जगत का एक ही शासक है, जो मनुष्य और पशु आदि प्राणियों के शरीरों का रचयिता है, उस सुख स्वरूप परमात्मा की अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञा पालन में समर्पित करके भक्ति विशेष किया करें ।

काव्य

जड़ और चेतन का जो स्वामी	एक अगोचर अंतर्यामी ।
जो है हर वस्तु में विराजा	प्राणी अप्राणी का राजा ।
दोपाए चौपाए जेते	रचे हैं जिसने अनन्त कृपा से ।
मनुष्य, पशु, पक्षी जग सारा	एक जो सबका है राचन हारा ।
अभिन्न शरीरों का निर्माता	सर्व जगत यश जिसका गाता ।
अति प्रेम और अन्तःकरण से	त्याग भाव और पूरे जतन से ।
उसकी भक्ति करें विशेषा	आज्ञा उसकी पालें हमेशा ।

اچارن - اوم ياپراتو - منشو - مہت دیک - اوراجاگتو - وھو یا ایٹے اسبہ
دوی پدرش - چتش پدا - کسمی دیواکے یویشا دھیم -

شبدا رتھ - (یا) جو (پرانہ) پران ولے اور (منشہ) اپانی روپ (جگت) جگت کا
(دہتوا) اپنی انتہا جہاں سے (ایک رت) ایک ہی (راجا) راجا (وھو) دراجان

ہے۔ (یام جو داسیہ) اس (دوی پلہ) منشیہ ادی اور (چنش پلہ) گوادی پرائیوں کے شریوں کی (ایشیہ) کچنا کرتا ہے۔ ہم اس (کمنی) سکھ روپ (دویاسے) سکھ (یشوریہ) کے دینے ہارے پرمانہ کی آپاسنا ارتھات (ہویشا) اپنی شکل اتم ساگری کو اس کی آگیا پالن میں سمرپت کر کے (دوہیم) بھگتی ویشیش کریں۔

بھاوارتھ۔ جو اپنی انت ہیماں سے پرانی اور اپانی جگت کا ایک ہی شلاسک ہے جو منشیہ اور یشوادی پرائیوں کے شریوں کا رجیتلہ ہے۔ اس سکھ سو روپ فرماتا کہ اپنی شکل اتم ساگری کو اس کی آگیا پالن میں سمرپت کر کے بھگتی ویشیش کریں۔

(کادیہ)

جہڑ اور چیتن کا جو سوامی۔ ایک اگوچر انتریامی جو ہے ہر وستو میں ورجا۔ پرائی، پرائی کا راجا دوپائے چو پائے جیتے۔ رچے ہیں جس نے انت کرپا سے نش پشو پکشی جگ سارا۔ ایک جو سب کلمے راجن ہارا ابھن شریوں کا فرماتا۔ سرو جگت نیش جس کا گاتا آئی پریم اور انتہ کرن سے۔ تیاگ بھاد اور پڑے جتن سے اس کی بھگتی کریں ویشیشا۔ آگیا اس کی پالیں ہمیشہ

پانچواں منتر

प्रोम् येन द्यौरग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं
येन नाकः । यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय
हविषा विधेम ॥ ५ ॥

यजुः ३२। ६।

अर्थः—(येन) जिस परमात्मा ने (उग्रा) तीक्ष्ण स्वभाव वाले (द्यौः) सूर्य आदि [च] और [पृथिवी] भूमि को (दृढा) धारण किया और [येन] जिस जगदीश्वर ने (स्वः) सुख को (स्तभितम्) धारण किया और (येन) जिस ईश्वर ने (नाकः) दुःख रहित मोक्ष को धारण किया है। (यः) जो (अन्तरिक्षे) आकाश में (रजसः) सब लोक लोकान्तरों को (विमानः) विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों को निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस (कस्मै) सुखदायक (देवाय) कामना करने के योग्य परब्रह्म को प्राप्ति करने (हविषा) सब सामर्थ्य से (विधेम) विशेष भक्ति करें ॥५॥

भावार्थ:—जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाव वाले सूर्य आदि और पृथ्वी आदि को धारण किया और जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण किया और जिस ईश्वर ने दुःख रहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश में सब लोक लोकान्तरों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, ऐसे सुखदायक परमात्मा की हम सब सामर्थ्य से भक्ति विशेष करें ।

काव्य

उग्र रूप भानू और पृथ्वी, जिस जगदीश्वर ने है राची ।
सुख को जिस ईश्वर ने धारा, रोग ताप दुःख हरने हारा ।
जिस स्वता ने किया है निश दिन, दुःख रहित मोक्ष को धारण ।
गगन मंडल में लोक लोकान्तर, पक्षीवत उड़ते हैं निरन्तर ।
जिस कर्ता की अकथ कृपा ने, इतने सारे लोक निर्माणे ।
अति प्रेम और अन्तःकरण से, त्याग भाव और पूरे जतन से ।
उसकी भक्ति करे विशेषा, आज्ञा उसकी पाले हमेशा ।

اچارن - اوم بين دلو گر پرتھوی چہ درٹھا۔ بین سوست بھتم۔ بین ناکا۔ یو
انتر کشتے۔ رجسودمانا۔ کسمی دیوانے ہویشا ودھیم
شیدار تھ۔ (بین) جس پرمانے (اگر) تیکش سو بھاوا لے (دیو) سورج آدی
(چہ) اور (پرتھوی) بھومی کو (درٹھا) دھارن کیا اور (بین) جس جگدیشور نے (سوا)
سکھ کو (ست بھتم) دھارن کیا اور (بین) جس ایشور نے (ناکا) دکھ رہیت موکش
کو دھارن کیلے (پا) جو (انتر کشتے) آکاش میں (رجسہ) سب لوک لوکانتروں کو
(دمانہ) جیسے کچی اٹتے ہیں ویسے نرمان کرتا اور بھرم کرنا ہے۔ ہم لوگ اس
(کسمی) سکھ (دیوانے) کا مانا کرنے کے یوگیہ پار بھرم کی پر اپتی کرنے (ہویشا)
سب سمر تھ سے (ودھیم) وشیش بھگتی کریں
بھاوا در تھ۔ جس پرمانے تیکش سو بھاوا لے سورج آدی اور پرتھوی آدی کو دھارن
کیا۔ اور جس جگدیشور نے سکھ کو دھارن کیا۔ اور جس ایشور نے دکھ رہیت موکش کو
دھارن کیلے۔ جو آکاش میں لوک لوکانتروں کو ویسے نرمان کرتا اور بھرم کرنا ہے
جیسے آکاش میں کچی اٹتے ہیں۔ ایسے سکھ (پرماتما) کی ہم سب سمر تھ سے
بھگتی وشیش کریں۔

(काव्य)

अगरुप बहानो और प्रेत्यो - जिस जगद्विश्व ने है राजी
 सुक को जिस विश्व ने देवारा - रुक ताप दुक मरने नारा
 जिस रज्जु ने किया है नदन - दुक रेत मुकेश को देवारा न
 लकन मंडल में लुक लुकान्तर - पक्षी वत अरुते हैं नरन्तर
 जिस करता की अकत कर्पाने - अतने सार लुक नरमाने
 अति प्रिय और अन्त करन से - तियाग बहादुर और पुनः से
 अस् की भगति करि वसिष्ठा - अगिा अस् की पालिा भमिशः ?

छठा मन्त्र

ज्ज्ठान्तर

अस् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि
 परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्तो अस्तु
 वयं स्याम पतयो रयिणाम् ॥६॥

ऋक् १०। १२१। १०।

शब्दार्थः—हे (प्रजापते) सब प्रजा के स्वामी परमात्मा ! (त्वत्) आपसे (अन्यः) भिन्न दूसरा कोई (ता) उन (एतानि) इन (विश्वा) सब (जातानि) उत्पन्न हुये भूगोलादि जगत् को बनाने वाला और (परिता) व्यापक (न) नहीं (बभूव) हैं, (ते) उस आपके भक्ति करने हारे हम चेतनादिकों को (न) नहीं (परि, बभूव) तिरस्कार करता है अर्थात् आप सर्वोपरि हैं । (यत्कामाः) जिस २ पदार्थ की कामना वाले होके हम लोग भक्ति करें (ते) आपका (जुहुमः) आश्रम लेवें और वांछा करें (तत्) वह कामना (नः) हमारी सिद्ध (अस्तु) होवे, जिससे (वयम्) हम लोग (रयिणाम्) धनैश्वर्यों के (पतयः) स्वामी (स्याम) होवें अर्थात् हम सब धनपति बन जावें ॥६॥

भावार्थ—हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मा आपके बिना कोई दूसरा सारे उत्पन्न हुये भूगोलादि जगत् को बनाने वाला और व्यापक नहीं है, आप हम भक्ति करने हारे चेतनादिकों को सर्वोपरि हैं, जिस-जिस पदार्थ की कामना लेकर हम भक्ति करें, वह कामना हमारी पूरी होवे जिससे हम धनैश्वर्यों के स्वामी बन जावें

کاوی

प्रजा के स्वामी पालक पोषक, जगदाध्यक्ष सहायक रक्षक ।
तुम से भिन्न जगत उत्पादक, कोई नहीं है प्रभू व्यापक ।
सर्वोपरि हैं, आप स्वयंभू, शांतिदाता हैं शिव शम्भू ।
मांगें तुझ से जेत पदार्थ, भक्ति करें सदैव यथार्थ ।
कामना हमरी पूर्ण कीजे, दान हमें भक्ति का दीजे ।
ऐसी कृपा करो अन्तर्यामी, धनैश्वर्यों के होवें स्वामी ।
अपने धन पर हो अधिकारा, तोहे अपे सर्वस्व हमारा ।

اچارن - اوم پرچلپتے نہ تو دیتا - نیٹو - وشواہاتی پریٹا - دیکھو - یہت کاملستے
جہو مستنوں استودیم - سیام پتیوری نام -

شبنم ارتھ - ہے پرچلپتے سب پرچلکے سوامی پرمانما (توٹ) آپ سے (انیہ) بھن
دوسرا کوئی (تا) آن (انیائی) ان (وشٹو) سب دجانی (اتین) ہوئے کھوکول آدی جگت کو
بنائے والا اور (پریٹ) ویاپک (نہ) نہیں (دیکھو) ہے (تے) اُس آپ کے بھگتی کرنے
مارے ہم جیتن آدوں کو (نہ) نہیں (پری دیکھو) ترسکا کر تلیے - ارتھات آپ سرودپری
ہیں - (یہت کاما) جس جس پرارتھ کی کامنا ملے ہوئے ہم لوگ بھگتی کریں (تے) وہ کامنا
(نہ) ہماری سدھ (استو) ہووے جس سے (دویم) ہم لوگ (رئی نام) دھن ایشوریہ کے
(پتیا) سوامی (سیام) ہوویں - ارتھات ہم سب دھن پتی بنی جادیں

بھن وارٹھ - ہے سب پرچلکے سوامی پرمانما - آپ کے بنا کوئی دوسرا سارے اُتین ہوئے
کھوکول آدی جگت کو بنائے والا اور ویاپک نہیں ہے - آپ ہم بھگتی کرنے مارے جیتن آدوں
کو سرودپری ہیں - جس جس پرارتھ کی کامنا ملے کر ہم بھگتی کریں - وہ کامنا ہماری پوری ہووے
جس سے ہم سب دھن ایشوریہ کے سوامی بن جادیں -

(کاویہ)

پرچلکے سوامی پالک پوشک ✦ جگدا دھیکش سہائیک رکھشک
تم سے بھن جگت اُتپادک ✦ کوئی نہیں ہے پرچھو ویاپک
سرودپری ہیں آپ سویم بھو ✦ شانتی داتا ہے شوشم بھو
مانگیں تجھ سے جیت پدارتھ ✦ بھگتی کریں سدیو تیرتھ
کامنا ہماری پورن کیجے ✦ دان ہمیں بھگتی کا دیجے
ایسی کریا کرو انتریامی ✦ دھن ایشوریہ کے ہوویں سوامی
اینے دھن پر ہو ادھیکارا ✦ تو ہے ایں سرودسوہارا

सातवां मन्त्र

ساتواں मन्त्र

ओम् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद
भुवनानि विश्वा । यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये
धामन्धैरयन्त ॥ ७ ॥

यजुः ३३। १०।

शब्दार्थ :—हे मनुष्यो ? (सः) वह परमात्मा (नः) अपने लोगों का (बन्धुः) भ्राता के समान सुखदायक (जनिता) सकल जगत् का उत्पादक (सः) वह (विधाता) सब कार्यों का पूर्ण करने हारा (विश्वा) सम्पूर्ण (भुवनानि) लोक मात्र और (धामानि) नाम, स्थान, जन्मों को (वेद) जानता है, और (यत्र) जिस (तृतीये) सांसारिक सुख दुःख से रहित नित्यानन्दयुक्त (धामन्) मोक्षस्वरूप धारण करने वाले परमात्मा में (अमृतम्) मोक्ष को (आनशानाः) प्राप्त होके (देवाः) विद्वान् लोग (अधैरयन्त) स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायधीश है । अपने लोग मिल के सदा उसकी भक्ति किया करें ॥ ७ ॥

भावार्थ :—हे मनुष्यो ! वह परमात्मा हम सबको भ्राता के समान सुख देने वाला, सकल जगत् को उत्पन्न करने वाला और सब कामों को पूर्ण करने वाला है । वह सम्पूर्ण लोकमात्र के नाम, स्थान और जन्मों को जानता है, उस सांसारिक सुख दुःख से रहित नित्य आनन्दयुक्त मोक्षस्वरूप धारण करने वाले परमात्मा में विद्वान् लोग मोक्ष को प्राप्त होकर स्वेच्छा-पूर्वक विचरते हैं । वही परमात्मा हमारा गुरु, आचार्य, राजा और न्यायधीश है । हम सब मिल कर उसी की भक्ति किया करें ।

काव्य

बन्धु सम सुख देने हारा, जगत् उत्पादक जगदाधारा ।
कामना पूरण करें विधाता, अंदर बाहिर का जो ज्ञाता ।
लोक लोकांतर पदार्थ जग के, नाम धाम और वह जाने सब के ।
सांसारिक सुख-दुःख से रहिता, सुख का मानो सरोवर बहता ।
आनंद मोक्ष प्राप्ति कारण, जामें विचरें देव महाजन ।
गुरु राजा न्यायधीश हमारा, आचार्य सर्वेश हमारा ।
मिल कर उसकी करें उपासन, जो है मोक्षस्वरूप निरंजन ।

اُچارن :- اوم سے نو بندھ جنتا سے ودھاتا دھامانی وید بھو وانی ویشوا
بیز دیوا امرت مان شنانا ستر تیئے دھامن دھیر نیت ۔

شید ارتھ :- ہے منشیو (سہ) وہ پرماتما (تہ) اپنے لوگوں کا ارتھات ہمارا (بندھو)
بھارت کے سامن سکھانیک (جنتا) سکل جگت کا اُتپادک (سہ) وہ (ودھاتا) سب کاریوں کا
پورن کرنے والا (دشوا) سمپورن (بھو وانی) لوک مانتر اور (دھامانی) تمام ستھان جنہوں کو
(وید) جانتا ہے ۔ اور (بیز) جس (نرتیئے) سانسارک سکھ دکھ سے رہت ننتیہ آنتدلیک
(دھامن) موکش سہو پ دھارن کرنے والے پرماتما میں (امرت) موکش کو (آن شنانا)
پراپت ہو سکے (دیوا) ودوان لوگ (دھیر نیت) سوکھا پورک دچرتے ہیں ۔ وہی پرماتما اپنا
گورو آچار یہ راجہ اور نیلئے ادھیش ہے ۔ اپنے لوگ کے سدا اس کی بھگتی کیا کریں ۔
بھاوارتھ :- ہے منشیو وہ پرماتما سب کا بھارت کے سامن سکھ دینے والا ۔ سکل جگت
کو اپن کرنے والا اور سب کاموں کو پورن کرنے والا ہے ۔ وہ سمپورن لوک مانتر کے نام ستھان
اور جنہوں کو جانتا ہے اس سانسارک سکھ دکھ سے رہت ننتیہ آنتدلیک موکش سہو پ
دھارن کرنے والے پرماتما میں ودوان لوگ موکش کو پراپت ہو سکے سوکھا پورک دچرتے ہیں ۔ وہی
پرماتما ہمارا گورو آچار یہ راجہ اور نیلئے ادھیش ہے ہم سدا اسی کی بھگتی کیا کریں ۔
(دکاویہ)

بندھو سم سکھ دینے والا ۔ جگت اُتپادک جگد ادھارا
کامن پورن کرے ودھاتا ۔ اندر باہر کا جو گیتا
لوک لوکانتر پدارتھ جگ کے ۔ تام اور دھام وہ جانے سب کے
سانسارک سکھ دکھ سے رہتا ۔ سکھ کا مانو سروور بہتا
آنتد موکش پراپتی کا رن ۔ جاین وچیریں دیو ہاجن
گورو راجہ نیلئے دھیش ہمارا ۔ آچار یہ سرویش ہمارا
مل کر اس کی کریں اُپاسن ۔ جو ہے موکش سہو پ نرنجن ۔



प्राठवां मन्त्र

آسمان منتر

ओम् अग्ने नयसुपथाराय अस्मान् विश्वानि देव
व्युनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते
नम उक्तिं विधेम ॥८॥

यजु ४०। १६।

अर्थ—हे (अग्ने) स्व प्रकाश ज्ञान स्वरूप सब जगत् के प्रकाश करने हारे, (देव) सकल सुखदाता परमेश्वर !- आप जिससे (विद्वान्) सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं कृपा करके (अस्मान्) हम लोगों को (राये) विज्ञान व राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए (सुपथा) अच्छे धर्मयुक्त प्राप्त लोगों के मार्ग से (विश्वानि) सम्पूर्ण (व्युनानि) प्रज्ञान और उत्तम कर्म (नचे) प्राप्त कराइये, और (अस्मत) हमसे (जुहुराणम्) कुटिलतायुक्त (एनः) पापरूप कर्म को (युयोधि) दूर कीजिये, इस कारण हम लोग (ते) आपकी (भूयिष्ठाम्) बहुत प्रकार की स्तुतिरूप (नमः उक्तिम्) नम्रतापूर्वक प्रशंसा (विधेम) सदा किया करें और सभी सर्वदा आनन्द में रहें ॥८॥

भावार्थ—हे सब जगत् के प्रकाश करने वाले स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूप, सकल सुखदाता परमेश्वर, आप सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं । कृपा करके हम सबको विज्ञान व राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे धर्मयुक्त प्राप्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइये और हमसे कुटिलतायुक्त पाप कर्म को दूर कीजिये । इस हेतु हम आपकी बहुत प्रकार से स्तुति रूप नम्रतापूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सभी सदैव आनन्द में रहें ।

काव्य

स्वप्रकाश ज्ञान स्वरूपा, ज्योतिर्मय सर्वज्ञ अनूपा ।
मंगलमय सकल सुखदाता, सम्पूर्ण विद्यायुक्त विधाता ।
प्राप्त उत्तम कर्म कराओ, दुष्कर्मों से दूर हटाओ ।
कुटिल भाव कभी निकट न आवें, सत्यमार्ग पर सदा जलावें ।
उलटे राह कभी न चालें, धर्म युक्त मार्ग को भालें ।
विज्ञान ऐश्वर्य प्राप्ति कारण, हमें सुपथ दिखाओ भगवन ।
नम्र भाव से शाम सबेरे, भजन प्रभु नित गावें तेरे ।

آچاران :- اوم اگنے نے سو پتھارائے اسمان و شوانی دیو و یونانی و دوان
یو یو دھیس مجھ و دان مینو بھویشٹھانے نمہ اکتھم و دھیم

شب دارتھ :- ہے (اگنے) سو پرکاش گیان سو روپ سب جگت کے پرکاش کرنے
بارے - (دیو) سکل سکھ دانا پریشور آپ جس سے (و دوان) سمپورن دویا یکت ہیں - کرپا
کر کے (اسمان) ہم لوگوں کو (رائے) و گیان دراحیہ آدمی ایشوریہ کی پراپتی کیلئے (سو پتھارائے)
اچھے دھرم یکت آپت لوگوں کے مارگ سے (و شوانی) سمپورن (یونانی) پرگیان اور اتم کرم
(نے) پراپت کرایئے - اور (اسمت) ہم سے (جھورائے) کٹلتا یکت (اینہ) پاپ روپ کرم کو
(یو یو دھمی) دور کیجئے - اس کارن ہم لوگ (تے) آپ کی (بھویشٹھام) بہت پرکار کی استی
روپ (نمہ اکتھم) نرتناپورک پرشنا (و دھیم) سدا کیا کریں - اور سبھی سدا آند میں رہیں -
بھاو دتھ :- ہے سب جگت کے پرکاش کرنے بارے سو پرکاش گیان سو روپ سکل
سکھ دانا پریشور - آپ سمپورن دویا یکت ہیں - کرپا کر کے ہم سب کو و گیان و ایشوریہ
آدمی کی پراپتی کے لئے اچھے دھرم یکت آپت لوگوں کے مارگ سے سمپورن پرگیان اور
اتم کرم پراپت کرایئے - اور ہم سے کٹلتا یکت پاپ روپ کرم کو دور کیجئے - اس ہیتو ہم
لوگ آپ کی بہت پرکار کی استی روپ نرتناپورک پرشنا سدا کیا کریں - اور سبھی سدا
آند میں رہیں -

(کاویہ)

سو پرکاش گیان سو روپا ♦ جیو تر مے سرو گیہ انوپا
منگل مے - سکل سکھ دانا ♦ سمپورن دویا یکت و دھاتا
پراپت اتم کرم کراؤ ♦ دُش کرموں سے دُور ہٹاؤ
کٹل بھاؤ کبھی نہ آدیں ♦ سدا مارگ پر سدا چلا دیں
لئے راہ کبھی نہ چالیں ♦ دھرم یکت مارگ کو بھالیں
و گیان ایشوریہ پراپتی کارن ♦ ہمیں سو پتھار دھکاؤ بھگون
نمہ بھاؤ سے شام سویرے ♦ بھجن پر بھونٹ گائیں تیرے



आर्य समाज के नियम

- १—सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।
- २—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
- ३—वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
- ४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिये।
- ५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिये।
- ६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
- ७—सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बतना चाहिये।
- ८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।
- ९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।
- १०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

बहुत आभार है बक्स मधुरा रोड नई दिल्ली में छपा